IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

Impact Factor: 6.252

Volume 2, Issue 1, April 2022

रीतिकालीन प्रमुख नीतिपरक कवि : एक अध्ययन

Dr. Chandrakant Mishra

Awadhesh Pratap Singh University, Rewa, Madhya Pradesh, India

Abstract: हिन्दी साहित्य के रीतिकाल में नीतिकाव्य भी एक प्रमुख प्रवृत्ति है, इस काल की नीति विषयक पुच्छल तारे की भाँति अचानक टूट कर नहीं आयीं, संस्कृत काव्यों से इनकी एक परंपरा प्रवाहित हो रही है। भुर्तहरि ने नीतिशतक 650 नामक से संस्कृत भाषा में काव्यों में इनकी एक परम्परा प्रवाहित हो रही है। भर्तुहरि ने नीतिशतक 650 नाम से संस्कृत भाषा में नीतिकाव्य की रचना की थी। हेमचंद्र के अप्रभंश व्याकरण में अनेक दोहे नीति से संबद्ध है, कबीर, तुलसी, रही, जमाल आदि कवियों में भी नीति विषयक रचनाएँ दोहाछंद में है। रीतिकाल में नीति विषयक काव्यों के रचयिताओं में वृंद, गिरधर, कविराय, बैलाल, सम्मन, रामसहाय, दीनदयाल गिरि आदि के नाम विशेषता उल्लेखनीय है।

Keywords: रीतिकालीन कवि, नीतिपरक, नीतिकाव्य, परम्परा, आदि।

प्रस्तावनाः

नीति काव्याकार ईशा की प्रथम चरण में सर के आसपास मेड़ता जोधपुर निवासी वृंद 1704 अपनी सतसई की रचना की वृंदा सतसई में 1700 दोहे है भाषा सरल सरस और कलापूर्ण है। वृंद के दोहे ये रसमय कवित्व तो नहीं है; हा कलापूर्ण सुक्तियाँ उन्हें आवश्यक कह सकते हैं। वृंद सतसई के दोहे–

"नीकी पै नीके लगै, कहिए समय विचारी।
सवकै मन हरषित करै, ज्यौं विवाह में गारि।।
भले बुरे सब एक सम, जौ लौं बोलत नाहिं।
जान परत हैं कागपिक, ऋतु बसंत के मांहि।।

गरिधर कविरायः

व्यवहार और नीति से संबद्ध कुडलिया लिखकर गिरधर कविराय ने जितनी अधिक प्रसिद्धि प्राप्त की है, उतनी प्रसिद्धि रीतिकाल कोई अन्य नीति काव्यकार नहीं कर सका। नीति विषय कुडलिया केवल दो कवियों की सुनी जाती है, एक गिरधर कविराय की दूसरी दीनदयाल की इन दोनों में गिरिधर कविराय अधिक ख्यातनामा हैं। इनका कविता काल 1743 ई. के वाद माना जा सकता है।

जाति, गाँव, परिवार, घरबार, राजदरबार आदि स्थानों पर मनुष्यों को क्या नीति अपनानी चाहिए और कैसा व्यवहार करना चाहिए, इन बातों को कवि ने ऐसी सीधी–सादी सरल भाषा में तथ्यपूर्ण ढंग से बता दिया है कि श्रोता पर शीघ्र प्रभाव पड़ता है, वह सामाजिक व्यवहार के लिए उन बातों को गांठ बाध लेता है। गिरधर

की कुंडलिया में गिरधर कविराय का नाम के साथ साई शब्द भी आता है। कुछ विद्वानों का कहना है कि साई शब्द वाली कुंडलिया गिरधर की पत्नी की रची गई है। कविराय नाम से ऐसा प्रतीत होता है कि ये जाति के भाट थे परन्तु निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता है।

गिरिधर के काव्य में व्यवहार और सामाजिक जीवन की पूर्ण अभिव्यक्ति मिलती है। मित्र, शत्रु, सज्जन, पिता–पुत्र, भाई, धन, भाग्य, फूट, चिंता, माया, माँगना, वचन पालन, आदि तत्वों पर कवि का ध्यान अत्यधिक गया है। कवि ने लोक स्वार्थ, वर्ग, ईर्ष्या अभिमान आदि नीतियों को व्यक्ति और समाज के लिए अहितकर बताया है। वस्तुतः गिरिधर कविराय विरक्त पुरुष ये रमते जोगी और बहते पानी के समान उन्होंने समाज के लोक–व्यवहार की नीतियों कबीर से साम्य रखती हुई समाज में प्रभावशाली चोट उत्पन्न करती है। कबीर के समान गिरिधर उपदेश देते समय उसे ऐसे विस्तार के साथ समझा देना चाहते है कि जिससे उसके द्वारा कही गई बात, दूसरों की आँखे खोल दें।[1]

''कम खाना, अतिथि सत्कार, बारात तथा हुक्का आदि कुछ ऐसी नीतियॉ है जिन पर गिरिधर से पूर्व नीतिकारों का ध्यान नहीं गया। हुक्का पीने को उन्होंने शरीर के लिए हानिकारक बताया है। उन्होंने 250 वर्ष पूर्व ही आधुनिक वैज्ञानिकों के समान तम्बाकू को शरीर के लिए हानिकारक घोषित कर दिया था। यह उनकी मौलिक देन है।''[2]

गिरिधर के जीवन और समय के संबंध में कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। आपने अधिकांश कुण्डलियाँ अवधी में लिखी है। इससे अनुमान लगता है कि ये इलाहाबाद के आस–पास के रहने वाले थे और भाट जाति के थे। शिवसिंह सेंगर ने इनका जन्म सन् 1713 तथा रचनाकाल 18वीं शताब्दी माना है। आपकी कुण्डलियों हस्त लिखित पोथियों के रूप में मिलती है। जिनके दस संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। सबसे बड़े संग्रह में 457 कुण्डलियाँ हैं। इन्होंने कुछ दोहे, सोरठे और छप्पय भी लिखे।[3]

जन–जीवन में कवि गिरिधर के बहुत अधिक प्रचार का कारण इनका दैनिक जीवन के लिए उपयोगी एवं महत्वपूर्ण बातों का सरल और सीधी भाषा शैली में कथन है। इनमें अपने अनुभव पर आधारित नई बातों के साथ पारम्परिक कथन भी है।

भोलानाथ तिवारी ने 'हिन्दी रीति काव्य संग्रह' में पर्याप्त मात्रा में नीति काव्य लिखने वाले कवियों में इनकी गणना की है।

अच्छा व्यवहार तथा उचित कर्तव्य ही नैतिकता बोध है। इसके बिना न समाज प्रगति पर आ सकता है और न ही साहित्य में महानता का गुण आ सकता है। एक उज्जवल राष्ट्र की नीव नैतिकता, परम्परा के लिए नीति साहित्य की पुस्तकें वह काम करती हैं। जो माता–पिता भी नहीं कर सकते। ऐसी स्थिति में उत्कृष्ट नीति साहित्य ही बच्चों का मार्ग–दर्शन कर सकता हैं गिरिधिर कविराय का नीति साहित्य इस उद्देश्य की पूर्ति करता है।

आजादी के साठ वर्ष बीत जाने के बाद भी हमने अपनी संस्कृति को मजबूत से पकड़ने की बजाय उसकी उपेक्षा की है। हम पाश्चात्य संस्कृति को ही अपनाने में आधुनिकता मानते है। आज हम अपनी संस्कृति राष्ट्रीयता और नैतिकता से बेखबर है। इस बात की चिंता किसी को नहीं कि हम भावी पीढ़ी को जीवन के शाश्वत मूल्य दें। बाह्य वातावरण विशेष रूप से टेलीविजन का घातक प्रभाव किसी से छिपी नहीं है। नैतिक मूल्यों की चिंता किसी को नहीं आज का बालक डालर के सपने जल्दी देखने लगता है। वही माता–पिता भी इसे अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा मानते हैं। यदि हम अपने देश को एक राष्ट्र के जीवित रखना चाहते है तो अपनी परम्परा और संस्कृति का आधार लेना होगा। जड़ो को छोड़कर कोई भी राष्ट्र चहुमुंखी प्रगति नहीं कर सकता। अभिभावक और शिक्षक इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते है।

गिरिधर के काव्य में व्यवहार और सामाजिक जीवन की पूर्ण अभिव्यक्ति मिलती है। मित्र, शत्रु, सज्जन, पिता–पुत्र, भाई, धन, भाग्य, फूट, चिंता माया, माँगना, वचन पालन, आदि तत्वों पर कवि का ध्यान अत्यधिक गया है। कवि ने लोक स्वार्थ, गर्व, ईर्ष्या, अभिमान आदि नीतियों को व्यक्ति और समाज के लिए अहितकर बताया है। वस्तुतः गिरिधर कविराय विरक्त पुरुष ये रमते जोगी और बहते पानी के समान उन्होंने समाज के लोक व्यवहार का सूक्ष्म अंकन किया था। यही कारण है कि उनकी लोक–व्यवहार की नीतियाँ कबीर से साम्य रखती हुई समाज में प्रभावशाली चोट उत्पन्न करती है। कबीर के समान गिरिधर उपदेश देते समय उसे ऐसे विस्तार के साथ समझा देना चाहते हैं कि जिससे उसके द्वारा कही गई बात, दूसरों की आँखे खोल दें।

इनकी रचना संग्रहों से संग्रहीत रचनाएँ पाठको के समक्ष है जो समीक्षा के प्रतिमानों में खरी उतरती हैं। मूल्य–संस्कृति सादा जीवन उच्च विचार पीढ़ी संस्कार या निर्माण शिक्षा की महत्ता आदि से सम्बन्धित तथा विकृतियों के प्रति अपना विरोध दर्ज कराने वाली रचनायें भी इनमें शामिल है। जो समीक्षा की बिन्दु बन सकती है। ऐसी रचनाएँ निम्न है–

"जियबों मरिबो ये उभै, नहिं है अपने हाथ
जानत है, वे नन्दसुत बिहरत बद्दरन साथ
बिहरत बछरन साथ, चारि युग के रखवारे
इंद्र–मान जिन हरयो, विपत्ति के कारन हारे
कह गिरिधर कविराय, ज्वाब साहन से करिबो
आछत सीताराम, उमरि अपनी भरि जियबों"[4]

"रोय रोय के पाइए, रूपिया जिसका नाम
जब आउए फिर रोइए, इस मुख जिसको काम
इह मुख जिसको काम, इसमें तिसका है रूपी

ISSN (Online) 2581-9429
IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, April 2022
Impact Factor: 6.252

जिसके हेत मजूरी करे, उठाये कूपी
कह गिरिधर कविराय, खोज कर्दम धोई धोई''[5]

बैताल :

नीतिकाव्य में बैताल का समय 1780 ई. के बाद और 1829 ई. से पहले माना जा सकता है। ये जाति के वंदीजन थे, कहा जाता है कि चरखी वाले विक्रमशाह की सभा में रहा करते थे, बैताल ने अपने कुंडलिया में विक्रम को संबोधित करते हुए कहते हैं कि इनकी भाषा सरल है, तथा कथन शैली अनूठी है, उदाहरण–

ब्राम्हन सो मरिजाय, हाथ लै मदिरा प्यावै।
पूत बही भरि जाय, जो कुल में दाग लगौव।।
अरु वेनियाव राजा मरै, तब नीद भर सोइए।
बैताल कहै विक्रम सुनो, एते मेरे न रोइए।।''[6]

वृन्द :

महाकवि वृन्द जोधपुर नरेश जसंवंत सिंह के राजदरबारी माने जाते है। उनकी रचनायें स्वान्तासुखाय मानी गई है, लेकिन निश्चित रूप से वे जनहित कारी हो गई है। उन्होंने अपने जीवन काल में औरंगजेब, मिर्जाकादरी, अजमीमुश्शान, गुरूगोविन्द सिंह, मानसिंह एवं राजसिंह जैसे राजदरबारों की भी शोभा बढ़ाई। वे उस परिवेश में भी अपनी अंतश्चेतना में भारती संस्कृति की आस्था को प्रकाशित करने वाला दीप बने रहे। वे प्रतिभाशाली, धार्मिक दृष्टि, इतिहासकार और मानव मूल्यों को जीने वाले रहे है। उन्होंने नेत्रबत्तीसी रचना में नीति विषयक दोहा लिखा–

''राग रंग रस विरह, सुष पंच भाव को भेद।
ताको निरनौ वृन्द कवि कहत विचार प्रवेद।।''

इसी तरह श्रृंगार शिक्षा के साथ–साथ नीति सतसई रचना में नीति विषयक बात करते हुए उन्होंने लिखा–

''मान होत है गुनहिं ते, गुन बिन मान न होई।
सुख सारी राखै सबै काग न राखे कोइ।।''

संगति के प्रभाव के सम्बन्ध में उन्होंने लिखा–

''होत सुसंगति सहत सुख दुख कुसंग के थान।
गंदी और लुहार की देखहु बैठि दुकान।।''

इसी तरह विद्या के महत्व को दर्शाते हुए उन्होंने लिखा–

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, April 2022
Impact Factor: 6.252

''सरस्वती के भंडार की बड़ी अपूरब बात।
ज्यौं खरवै त्यौं त्यौं बढ़ै बिन खरचे घटि जात।।''

विवेक, पुरुषार्थ, सुपुत्र–कुपुत्र, मित्र, नारी के साथ राजनीति, अर्थनीति पर भी उन्होंने अपनी नीति विषयक कविताएँ लिखी है। रूढ़ियो और लोकोक्तियों का सुन्दर प्रयोग करते हुए वे लिखते है–

''आप बुरे जग है बुरौ, भले भलो जग जानि।
तजत बहेरा छांह सब, गहत आम की आनि।।''

सम्मन कविः

ये जाति के ब्राम्हान थे। जन्म 1777 में हुआ था इनका निवास स्थान मालवा जिला हरदोई था इनके नीति संबंधी दोहे ग्रामीण जनता में बहु प्रचलित हैं। भाषा सरल और सीधी होते हुए भी मर्म को स्पर्श करती है, मनुष्य का जीवन दिनो के फेर से अच्छा बुरा बनता रहता है।

इस भाव के दोहे बड़े मर्मस्पर्शी हैं और स्त्रियों के जहन में आज भी निवास करते हैं। मृदु भाषण के संबंध में सम्मन कहते हैं–

''सम्मन मीठी बात सों, होत सवै सुख पूर।
जेहि नहिं सीखों बोलियो, तेहि सीखो सब धूर।।''[7]

रामसहायदासः

जाति के कायस्थ थे और चौबेपुर जिला बनारस के रहने वाले थे। कविता में इनका उपनाम 'राम' था। बिहारी की 'सतसई' की भाँति इनका 'राम–सतसई' भी शब्दों की कारीगरी और वाकचातुर्य की दृष्टि से प्रसिद्ध हैं। इनका कविताकाल 1703 से 1823 ई. तक माना जा सकता है। जायसी के 'अखरावट' के तर्ज पर इन्होंने 'ककहरा' की रचना की थी, जिसमें नीति विषयक उपदेश है।

दीनदयालः

रीतिकालीन नीतिकारों में दीनदयाल सर्वप्रसिद्ध है, कहा जाता है कि ये मथुरा जिले के वरसावां गाँव के महात्मा थे। बाबा दीनदयाल गिरि जाति के गोसाई थे। आचार्य शुक्ल के मतानुसार इनका जन्म 1802 ई. के काशी के गायघाट नामक मुहल्ले में हुआ था। लौकिक विषयों में पर गिरी जी की अन्योक्तियॉ नीति साहित्य में मूर्धन्य स्थान रखती है। इनके ग्रंथ 'अन्योक्तिकल्युन्द्रय की भाषा बहुत स्वच्छ सुव्यवस्थित और परिष्कृत है। इनकी कविता में सहृदयता एवं भावुकता स्पष्टः लक्षित होती है।

कलामयी भावात्मकता के साथ नीतिकाव्य की सर्जना में दीनदयाल गिरि–गिरिधर कविराय उच्च सिद्ध होते हैं। अन्योक्ति–आश्रित नीतिकाव्य के क्षेत्र में इनकी मार्मिकता और सौन्दर्यानुभूति का विशिष्ट स्थान है। किसी क्रूर के संबंध में चंद्र को संबोधित करते हुए गिरि जी लिखते हैं–

केतौ सोभ कला करौ, करौ सुधा कौन दान।
नहीं चंन्द्रमणि जो द्रवै यह तेलिया चरवान।।
यह तैलिया चरवान बड़ी कठिनाई जाकी।
टूटीं माके सीस वीस बहु वांकी यंकी।।
बरवै दीनदयाल चन्द! तुम ही चित चेतौ।
कूट न कोमल होहिं कला जौ कीजैं केतौ।।''[8]

जहाँ भक्तिकाल दोहे में भक्ति और नीति दोनों का स्थान प्राप्त हुआ। वही रीतिकालीन नीतिकाव्य शुद्ध नीति की व्याख्या के लिए ही लिखा गया। समाज के कल्याण तथा सांस्कृतिक व्यावहारिक की ज्ञान प्राप्ति के दृष्टिकोण से नीति विषय काव्य परमोत्तम सिद्ध हुआ।

सामान्य जनता के लिए नीनिकाव्य सद्व्यवहार और चरित्र निर्माण का मार्ग प्रस्तुत करता है। अंत में उल्लेखनीय है कि जहाँ भक्तिकाल में तुलसी और रहीम के दोहों में भक्ति और नीति दोनों को स्थान प्राप्त हुआ, वही रीतिकालीन रीतिकाव्य शुद्ध नीति की व्याख्या के लिए ही लिखा गया है।

समाज के कल्याण तथा सांसारिक व्यवहारिकता की ज्ञान प्राप्ति के दृष्टिकोण से लिखा गया है। समाज के कल्याण तथा सांसारिक व्यवहारिकता की ज्ञान प्राप्ति के दृष्टिकोण से नीति विषयक काव्य परमोत्तम सिद्ध हुआ है। सामान्य जनता के लिए नीति काव्य सदव्यवहार और चरित्र निर्माण का मार्ग प्रस्तुत करता है।

किन्तु सरलता तथा मार्मिक भावुकता की दृष्टि से नीतिकाव्य बहुत उत्कृष्ट सिद्ध नहीं होता। यही कारण है कि रीतिकालीन नीतिकाव्य कविता की अपेक्षा पद्य की ओर से अधिक झुका हुआ है।

केशवः

केशव दरवारी कवि थे। इसीलिए दरवार में होने वाले राजनीतिक दॉव पेचों से उनका गहरा परिचय था। उन्हें पता था कि दरवार में किसी काम के संदर्भ में कितने पैंतरे काम करते हैं। केशव के पात्रों के संवाद उनकी दरवारी संस्कृति में प्रवीणा होने का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

रावण, अंगद संवाद इसकी प्रमुख प्रमाण है। रावण राजनीतिक दॉव पेंच और कूटनीति का सहारा लेकर अंगद को अपनी ओर मिलाना चाहता है। वह अंगद को पिता का प्रतिशोध लेने के लिए उकसाता है।

''जो सुत अपने बाप को वैर न लेइ प्रकासा।
तासो जीवत ही मरयो लोग कहै तजि त्रास।।''[9]

अंगद रावण नाना प्रकार के प्रलोभन देता है जब वह नहीं पिघलता तब अंतिम दॉव खेलता है। अंगद को अपनी ओर मिलने के लिए रावण राज्य का प्रलोभन देता है। रावण कहता है कि वह सीता को लौटाने के लिए राम के सामने शर्त रखेगा कि राम वानरराज को मारकर अंगद को राजा बना दें।

''देहिं अंगद राज तोकहँ मारि वानरराज कों।''

यह कथन रावण की कूटनीति चाल को प्रकट करता है वह खुद को अंगद का हितैसी करने का प्रयास करता है। परन्तु इस कूटनीतिज्ञ दॉव पेचों का अंगद पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

बिहारी :–

रीतिकालीन कवियों में बिहारी ने अपने दोहों के कारण सर्वाधिक धन और ऐश्वर्य अर्जित किया। कहा जाता है कि बिहारी के प्रत्येक दोहे पर एक अशर्फी इनाम में दी जाती थी। बिहारी ने अपने आश्रयदाता मिर्जा जयसिंह पर एक दोहा लिखा था, जिसे सुनकर कामासक्त मिर्जा पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने वापस राज्य का कार्य भार संभाल लिया–

''नहि पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकासु इहि काल।
अली कली ही सौ बँध्यो, आगे कौन हवाल।।''[10]

इस दोहे में धन दौलत से बड़ी सम्पत्ति श्रीकृष्ण का साथ होना बताया गया है। इसी तरह निम्नलिखित दोहे में बिहारी ब्राम्हाडम्बरों का विरोध कर केवल राम नाम जपने का समर्थन करते हैं।

''जय माला छापैं तिलक सरै न एकौ कामु।
मन काँचै नाचै वृथा साँचै राचै रामु।।''

इसी तरह बिहारी ने कुछ नीतिपरक दोहे भी लिखे हैं–'बिहारी ने स्वर्ण के बारे में बताया है कि उसे पाने मात्र से व्यक्ति उन्मत्त हो जाता है।'

''कनक कनक तै सौगुनौ, मादकता अधिकाय।
उहि खाए वौराइ इहिं पाऐ ही वौराई।।''

इसी तरह कवि ने दुहरे शासन में प्रजा के दुःख दर्द बढ़ने का वर्णन किया है–

''दुसह दुराज प्रजानु कौ क्यो न बढ़े दुःख द्वन्द्व।
अधिक अधेरो जग करत मिलि मानस रवि चन्द्र।।''

बिहारी के नीतिपरक दोहों में लोक शास्त्र क ज्ञान और उक्ति वैचित्र का भी समन्वय दिखलायी पड़ता है।

रहीम :–

कवि रहीम के काल में सामाजिक ताना–वाना और जानीय समाज मूल्य और मान्यताओं का संघर्ष तो भीतर–भीतर चल रही थी, संगति साहित्य कला और नृत्य आदि की महत्ता भी प्रायः राज दरवार और बादशाह के यहाँ से जुड़ प्रतिभाशाली गुणवान व्यक्तियों को उनके कला और कौशल के आधार पर भेंट और पुरस्कार दान और सम्मान प्राप्त होते रहते थे। रहीम एक अत्यन्त उपार सहृदय और दानी व्यक्ति थे उनमें ईश्वर के प्रति अन्याय आस्था और विनम्रता के भाव एक साथ परिलक्षित होते हैं। एक कवि ने रहीम की प्रसंशा में लिखा है–

"सीखी कहां नवावज्ञ ऐसी देनी दैन।
ज्यो ज्यो फर ऊँचे करै त्यों त्यों नीचे नैन।।"

इसका उत्तर में रहीम ने इस प्रकार लिखा है–

"देनदार कोई और है भेजत है दिन रैन।
लोक भरम हम पर धरै याते नीचे नैन।।"

उनके काव्य से स्पष्ट हो जाता है लौकिक जीवन व्यावहारिक मर्यादायें और अध्यात्मिक पक्ष की सूक्ष्म से सूक्ष्म जानकारी उन्हें थी। उन्हें काव्य में नीति भक्ति, प्रेरणा और समय के बदलते तेवर को बड़ी मजबूती से पकड़ा गया है। परिस्थितियों के अनुरूप जीवन जीने की कता प्रस्तुत की गई है।

रहीम को कुछ इतिहासकार साहित्यकार कवि से ज्यादा सेनापति शासक मानते है। उनकी दृष्टि में रहीम अकबर और उसके समकालीन शासकों के बीच सहयोगी सलाहकार और सैनिक के रूप में प्रतिष्ठित रहे। जहाँ तक उनके सृजन का सवाल है वह भी समय की कसौटी पर खरा उतरता है। रहीम के सृजन की मात्रा एवं उसके स्वरूप की अलग महत्ता है। रहीम का काव्य जीवन लोक जीवन से कहीं भी कम करके नहीं आंका जा सकता। इनका जीवन जितने उतार–चढ़ावों और संघर्ष से गुजरा शायद उसी कह अनुगूंज उनके सृजन में सवर्त्रत्र उभरती है। रहीम का काव्य जीवन के विविध पक्षों का प्रत्यक्षदर्शी बनता दिखाई देता हैं भुक्तभोगी रचना की संवेदना उसकी यथार्थता व्यक्ति रचना अध्ययन करते समय कई बार अपने को उसमें पाता है जो काव्य की सफलता का परिचायक है।

रहीम के जीवन वृत्त को इन पंक्तियों में समाहित करते हुए लिख जाना व्यापक अर्थवत्ता युक्त प्रतीत होता है–

"गंग गोछ मूंछे जमुन अधरन सरसुति राग।
प्रगट खान खानान सो तीरथ राज प्रयाग।।"

इस प्रकार वैशिष्ट से युक्त अब्दुल रहीम खानखाना मुगल साम्राट अकबर के मंत्री और सेनापति थे। उनके पिता का नाम बैरम खाँ था। एक अमीर के रूप में बैरम खां हुमायुं और अकबर के साथ जुड़े हुये थे। हुमायूं की पत्नी और बैरम खां की पत्नी दोनों सगी बहनें थी। बैरम खां हुमायूं का विश्ववासपात्र था। बुरे दिनों में बैरम खां ने हुमायूं का पूरा साथ दिया था। शेरशाह सूरी के पुत्र सलीम शाह सूरी की मृत्यु के उपरांत सन्

1554 में हुमायूं ने हिन्दुस्तान विजय के लिए प्रस्थान किया था, दिल्ली की राजगद्दी पर बैठते ही हुमायूं ने हिन्दुस्तानी के जमींदारों से अपने सम्बन्ध मजबूत करने के लिए उनके यहाँ विवाह सम्बन्ध बनाये। जमाल खां मेवाती की बड़ी पुत्री से हुमायूं का और छोटी पुत्री से बैरम खां का विवाह हुआ था। इसी भेद कन्या से 17 दिसम्बर सन् 1556 को लाहौर में अब्दुर्रहीम का जन्म हुआ था। अब्दुर्रहीम के जन्म के समय ही बैरम खां को खानखाना की उपाधि मिली थी। नवम्बर सन् 1555 में तेरह वर्षीय हुमायूं पुत्र अकबर को बैरम खां के संरक्षण में पंजाब का सूबेदार नियुक्त किया गया था। हुमायूं की मृत्यु के उपरांत जब अकबर गद्दी पर बैठा तब उसका सदर मुकाम सरहिंद में था। उसके पास बड़ी कठिनाइयॉ थी। सरहिंद, दिल्ली और आगरा के अलावा उसके पास कुछ भी नहीं था किन्तु बैरम खां के नेतृत्व में अकबर के साम्राज्य का विस्तार होता चला गया। अकबर उसे खान बाबा के नाम से पुकारता था। धीरे–धीरे अकबर राज्य सत्ता पर अपने पैर मजबूत करता चला गया और बैरम खां के शत्रुओं के बहकाये में आने लगा।

रहीम का जीवन उत्थान–पतन, जय–पराजय की एक लम्बी दास्तान है जिसमें बड़ी विविधतायें हैं। कभी वे आकाश की बुलंदी को छू रहे थे, तो कभी धरती पर पड़े अपमान की त्रासदी भोग रहे थे। उन्होंने अपनी वेदनाओं को दृढता के साथ भोगा और सहा वे एक सहृदय बुद्विमान प्रतिभा सम्पन्न कार्यकुशल, योग्य सेना नायक तथा कुशलन प्रशासक, असाधारण वीर थे। अकबर के अत्यंत प्रिय और अतंरग थे। जहाँगीर ने खुद उनकी प्रसंशा में कहा था कि–''खानखाना योग्यता एवं गुणों में अनुपम थे। उन्हें भारतीय भाषाओं का अच्छा ज्ञान था। उनके काव्य में स्पष्ट हो जाता है कि लौकिक जीवन व्यावहारिक मर्यादायें और अध्यात्मिक पक्ष की सूक्ष्म से सूक्ष्म जानकारी उन्हें थी। उनके काव्य में नीति, भक्ति, प्रेरणा और समय के बदलते तेवर को भी बड़ी मजबूती से पकड़ा गया है तथा परिस्थितियों के अनुरूप जीवन जीने की कला प्रस्तुत की गई है। पूरे वैभव विलाश के ठसक के साथ जीने वाले व्यक्ति में सहृददयता का अद्वितीय दर्शन होता है। अकबर के दरबार में ख्यातिलब्ध गायक तानसेन के संगीत को पारखी दृष्टि को रेखांकित करते हुए यह दोहा रहीम ने ही लिखा था–

''विधना यह जिय जानि के, शेषहि दिये न कान
धरा मेरू सब डोलिहै, तानसेन की तान।।''

संदर्भ स्रोतः

1. गिरिधर कविराय का नीति संसार, पृ. 1
2. भोलानाथ तिवारी : हिन्दी नीतिकाव्य, पृ. 27
3. गिरिधर कविराय का नीति संसार, पृ. 18
4. किशोरीलाल गुप्त, गिरिधर कविराय ग्रंथावली पृ. 3
5. किशोरीलाल गुप्त, गिरिधर कविराय ग्रंथावली पृ. 64

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, April 2022
IJARSCT
Impact Factor: 6.252

6. हिन्दी साहित्य का इतिहास–डॉ. नगेन्द्र सह सम्पादक हरदयाल, पृ.367–368
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास–डॉ. नगेन्द्र सह सम्पादक हरदयाल, पृ.
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास–डॉ. नगेन्द्र सह सम्पादक हरदयाल, पृ.
9. केशव की रामचद्रिक, पृ. 55
10. केशव की रामचद्रिक